Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आचार्य बच्चूलाल अवस्थी : एक दैदीप्यमान नक्षत्र

श्रीमती राजश्री जोशी*

* शोध छात्र, संस्कृत अध्ययनशाला, सुमन मानविकी भवन, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में परिगणित होती है। यह जितनी पुरानी है इसका साहित्य उतनी ही नवीनता लिये हुये है। रामायण, महाभारत एवं पुराण आदि सभी साहित्य इस संस्कृत भाषा में ही निबद्ध हैं। आज भी उत्कृष्ट साहित्य सृजन इस भाषा में सृजित किया जा रहा हैं।

अर्वाचिन कवि भी आज की सामाजिक परिस्थितियों व वातावरण को संस्कृत भाषा में अत्यन्त सरलता व सहजता से अपनी रचनाओं में स्थान देते हैं।

संस्कृत साहित्य भारतीय समाज के उत्कृष्ट जीवनमूल्यों, जीवनदर्शन, आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्पराओं का प्रतिबिम्ब है। संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति का संवाहक भी है।

पुरातन काल से चली आ रही प्रथाओं व परम्पराओं का अर्वाचीन साहित्यकारों ने नवीनता के साथ पालन किया हैं उन्हीं प्रमुख साहित्यकारों में इस शोधपत्र में आचार्य बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान' जी के व्यक्तित्व, कृतित्तव पर संक्षिप्त में प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

भूमिका

'कविता हृदयस्य कापि भाषा मुखरा वधूर्नवैव।
नहि शक्तिरथो न तत्र भक्ति प्रति प्रत्तिास्तु समर्पणाय मार्ग:।।
कविता हृदयस्य वाक्यशेष कथिते ऽनुक्तया प्रकाशमान:।
कविता कविता कथा पुराणी न पुराणी न नव सुराङ्गना सा।'

संस्कृत साहित्य के विषय में जैसा कि, सर्वविदित है कि, यह संसार का सर्वप्राचीन साहित्य है, यह आरोप प्राय: संस्कृतेत्तर भाषीय आलोचकों द्वारा लगाया जाता रहा है कि, संस्कृत साहित्य में एक प्रकार की सङ्कीर्णता विद्यमान है फिर चाहे वह देश की हो या काल की।

अर्वाचीन साहित्य को देखे तो हमें अनुभव हो जाता है कि, स्थिति ऐसी नहीं है। आज का संस्कृत साहित्यकार तमाम, सङ्कीर्णताओं से ऊपर उठकर 'यत्र विस्वभवत्यें कनीडंप्रभो:' की उक्ति को चरितार्थ कर रहा है। काव्यरचना के प्रत्येक स्तर पर संस्कृत कवि अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहा है।

अर्वाचीन संस्कृत साहित्य को यदि मात्रा की दृष्टि से परखा जाये तो यह सिद्ध हो जाता है कि, गत दो शताब्दियों में जितनी प्रभूत यात्रा में संस्कृत में सृजन-कर्म हुआ है सम्भवत: उतना कभी नहीं हुआ। यही कारण है कि, अभिराज मिश्र ने इस युग को 'स्वर्णकाल' कहा है।

अर्वाचीन संस्कृत साहित्यकारों ने न केवल अपनी रचनाओं की विषय वस्तु में व्यापक परिवर्तन किया है, अपितु अन्य भाषीय साहित्य से प्रभावित होकर नवीन विषयों को आत्मसात् भी किया है।

आचार्य राजशेखर इसी संदर्भ में कहते हैं –

अप्रतिभस्य पदार्थ सार्थ: परोक्ष इव प्रतिभावत: पुनरपश्यतोऽपि प्रत्यक्ष इव। केचन यहा कवयोऽपि देशद्धीपान्तर कथा पुरूषादि दर्शनेन तत्रत्यां व्यवह्रति निबध्नन्ति स्म।[1]

'समस्त भारत के आधुनिक कवियों द्धारा केवल काव्य, नाटक व गीत ही नहीं अपितु शास्त्रीय ग्रन्थों का निर्माण भी सतत् गति से किया जा रहा है। भारत के जिन प्रख्यात आधुनिक संस्कृत कवियों ने संस्कृत भाषा को समृद्ध किया उनमें डॉ. सत्यव्रत शास्त्री, डॉ. रेवाप्रसाद द्धिवेदी, डॉ. रमाकान्त शुक्ल, डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, आचार्य बच्चूलाल अवस्थी, इच्छाराम द्धिवेदी प्रमुख हैं।[2]

शोध आलेख – सृष्टि के आदि से प्रवहमाण सुरभारती का प्रवाह अधावधि वेगवान है। आज संस्कृत वाङ्मय विविध कवियों से जितनी समृद्धि को प्राप्त हुआ है, वह कभी नहीं हुआ।

इस शताब्दी में संस्कृत कविता ने जिस नवीन विधा में जनम लिया वह अभूतपूर्व है। गीतों और गजलों से संस्कृत साहित्य की यह समृद्धि न केवल गर्वानुभूति करवाने वाली है अपितु विस्मयकारक भी है।

इस शोध पत्र में आचार्य बच्चूलाल अवस्थीजी के साहित्य रचनाओं का परिचय प्रस्तुत किया गया है। विशेषकर उनका काव्यसंग्रह 'प्रतानिनी' जो वर्ष 1998 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त कर चुका है का उल्लेख है।

इस काव्य का प्रत्येक प्रतान अपने आपमें स्वतंन्त्र ग्रन्थ है। तथापि एक कवि का कर्त्ताव्य एकत्र उपलब्ध हुआ है यह सौभाग्य का विषय है। संस्कृत काव्य-रस के पिपासुओं को यह अनुपम अमृत के तुल्य है।

संस्कृत की यह समृद्धि भारत के लिए गौरव दायिनी है।

व्यक्तित्व – 'प्रतिभाशाली कवियों के लिए कुछ भी दुष्कर नहीं है। आचार्य बच्चूलाल अवस्थी साहित्य फलक के ऐसे ही दैदीप्यमान नक्षत्र है।'

'ज्ञान' उपनाम से प्रख्यात प्रभावशाली व्यक्तित्व, वैदुष्यव्रत-ओजस्विता से मण्डित संवेदनशील गुरूवाणी से युक्त आचार्य जो अति उदात्ता व्यक्तित्व के स्वामी, समाज के सभी व्यक्तियों से सफलतापूर्वक व्यवहार करनेवाले किन्तु सिद्धान्त तथा जीवनादर्शों पर आँच आने पर बड़ी से बड़ी शक्ति से सामना करने को उद्यत आचार्य श्री बच्चूलाल अवस्थी जी का जन्म 8 अगस्त 1918 को आचार्य बद्रीप्रसाद अवस्थी के यहाँ हुआ।

विनयशीलता एवं स्वाभिमान का अद्भुत समन्वय रखने वाले आचार्य बच्चूलालजी अनुशासन प्रिय एवं धार्मिक प्रवृत्ति के थे।

गुरूदेव अवस्थी जी का ज्ञान विस्तीर्ण, प्रखर एवं प्रगतिशील रहा है।

साधा जीवन उच्च विचार को अ?ीकार करने वाले आचार्यजी प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित कर ही लेते थे।

हिन्दी संस्कृत के ठोस विद्धान्, ग्रन्थ–ग्रन्थियों के समुद्धारक, शास्त्र निष्णात आचार्य, नवनवोद्भावना से परिपूर्ण संस्कृत में नयी–नयी कविता करने वाले अनेक गूढ़–गम्भीर ग्रन्थों के लेखक, कविता के सहृदय श्रोता और अवधानी आचार्य अवस्थीजी सदैव आत्मीयता से ओतप्रोत व प्रदर्शन संस्कृति से दूर रहे । इसलिए अपने शिष्यों में अतिप्रिय रहे तथा जब भी वे विद्यार्थियों को प्रेममयी झिडकियाँ एवं वात्सलमयी फटकार देते थे तो विद्यार्थी उसमें भी अभिमान समझते थे।

आचार्य ज्ञानजी ने अपना सर्वस्व व्यष्टि नहीं अपितु समष्टि के लिए समर्पित किया । उनका परम्पराओं तथा उत्सवों के प्रति सम्मान दर्शाता था कि, हमारा इतिहास गौरवशाली है एवं सभी को इनका सम्मान करना ही चाहिए।

एक मनीषी विद्धान में पाये जाने वाले समस्त गुणों में प्रमुख गुण 'पैनी समाचोलक दृष्टि' उनमें विद्यामान थी अत: वे स्पष्टवादिता तथा साहित्य के प्रति स्वतन्त्र दृष्टि के लिए सदैव याद किये जाते हैं।

प्रमुख और प्रसिद्ध साहित्यकार बशीर बद्र तो उनके बारे में कहते थे –

'आचार्य अवस्थजी जी तो चलता, फिरता, घूमता, एहसास करता–करवाता 'Idea' है। उनका व्यक्तित्व अमूर्त है।'

उनके चलने, बैठने, उठने बोलने सबसे महुआ की तरह ज्ञान टपकता हुआ प्रतीत होता है।

फिर भी प्रसिद्धि की मृगमरीचिका से सदैव दूर रहें और अपनी साधना में लीन रहें। इसलिए शिष्यों के लिए हमेशा श्रद्धा का स्थान थे।

आचार्य ज्ञानजी वास्तविकता को स्वीकार करने में कठिनाई से ही क्यों ना हो भावावेश पर अदृश्य अङ्कुश लगाने में प्रवीण थे आज के परिप्रेक्ष्य में तो यह अत्यन्त महत्वपूर्ण गुण हो सकता है।

उन्हें उनके ज्ञान के आधार पर जो कि उनके उपनाम को चरितार्थ करता था यदि चलता–फिरता 'Encyclopedia' कहे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। न जाने क्या–क्या है आचार्यजी में ।

संस्कृत की गरिमा की रक्षा के लिए वे अपने अनुयायियों एवं शिष्यों को परामर्श व स्नेहिल आदेश देने में कभी नहीं चुके।

ज्ञानजी की गहन जानकारी, अत्यन्त आकर्षक विद्धत्ता और दिलखुश अध्यापन ने इन्हें बड़े सहज भाव से एक काबिले तारीफ 'Democratic Popularity' से विभूषित किया ।

संस्कृत के उद्भट विद्धान, दुर्धर्ष साहसी, गुरू गम्भीर मेघगर्जन सरीखी वैदुषी मण्डित वाणी, दधीच–व्यक्तित्व अनायास ही गुरूजी को देखकर आरण्यक महर्षियों की स्मृति करा देती है।

यह कहना कठिन है कि, डॉ. बच्चूलाल अवस्थी का प्रखर पाण्डित्य संस्कृत में अधिक है या हिन्दी में ? यथावसर उनकी प्रत्युत्पन्नमति प्रसूत विद्धत्तापूर्ण टिप्पणियाँ सुनकर उनके पास सञ्चित विपुल स्वाध्याय सम्पदा एवं प्रखर मौलिक चिन्तन तथा अप्रतिम ज्ञान को दर्शाता है। उन्हें वागाभिव्यक्ति की उत्कृष्ट कला ज्ञात थी।

डॉ. अवस्थीजी में हम एक दार्शनिक, उद्भट स्वाध्यायी विद्धान तथा संवदेनशील कवि के दर्शन कर पाते हैं। अरबी, फारसी, अंग्रेजी, संस्कृत तथा हिन्दी आदि अनेक भाषाओं की प्रकृति एवं वाङमय से सुपरिचित डॉ. अवस्थी संस्कृत में प्रणीत उनकी मार्मिक अन्योक्तियों के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं।

अवस्थीजी के व्यक्तित्व में अगाध पाण्डित्य ऐसा था कि, सीधे मूल को पकड़ता था साथ ही वे हमेशा गुणीजनों के गुणों का सम्मान करते थे।

संस्कृत व्याकरण, साहित्य एवं दर्शन का गम्भीर अध्ययन उन्हें भारतीय चिन्तन पद्धति के बिरले विद्धानों की श्रेणी में रखता है। इसलिए चोटी के विद्धानों में आपकी गणना होती है।

आचार्य अवस्थीजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं स्वयं में एक संस्थान थे वे उन लोगों में से थे जिनके व्यक्तित्व का प्रभाव साथियों के साथ आने वाली पीढ़ी पर भी होता है।

आचार्यजी सर्वमान्य, सदैव आत्मीयता से ओतप्रोत एवं संस्कृत देवभाषा की हिन्दी को अलभ्य देन है।

मनुष्य का जीवन एक अनबूझ पहेली है। संसार में कुछ लोग वर्तमान में जीकर भी विगत दिनों के होते हैं, कुछ लोग आनेवाले समय के होते हैं, कुछ लोग वर्तमान के प्रवाह में तृण की भाँति बहते हुए अदृश्य रहते हैं तथा कुछ लोग भूत–भविष्य–वर्तमान को एक साथ समेट कर अपने समय में ही शाश्वत होते हैं। गुरूवर पण्डित बच्चूलाल अवस्थी जी अपने समय में ही शाश्वत होते हैं। गुरूवर पण्डित बच्चूलाल अवस्थजी अपने समय में ही शाश्वत हैं, नित्य हैं इसमें कोई सन्देह नहीं।

आचार्य ज्ञान उन नक्षत्रों में से एक है जिनका प्रकाश लगातार धरातल की ओर बढ़ रहा है। जब उनका आलोक पूरी तरह भूमण्डल पर उतरेगा नव संसार आश्चर्य करेगा उनसे प्रोत्साहन पाकर लोग हिन्दी, संस्कृत, उर्दू एवं अंग्रेजी भाषा में कार्य कर रहे हैं, जिनकी संख्या असंख्य नहीं तो अगणित अवश्य है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि, डॉ. अवस्थीजी का जीवन अनेक मानवीय गुणों से अभिमण्डित है उनमें विद्धत्ता के साथ ही लोक व्यवहार, भावनाओं का सङ्गम, अद्भुत कल्पकता जो उनके जीवन को इन्द्रधनुष के समान सतरङ्गी बनाती है।

कर्तृत्व – चिर सञ्चित जीवन मूल्यों को नए सन्दर्भो, नई अपेक्षाओं एवं नए दृष्टिकोण से देखना ही आधुनिकता है। अधुनातन समयानुकूल विचारसरणि का नाम ही आधुनिकता है। प्राचीन से अर्वाचीन यह अबाध गति से चल रहा है।

संस्कृत साहित्य सरिता ऋग्वेद से आजतक प्रवाहमान है 'साहित्य समाज क दर्पण है' और तत्कालीन साहित्यकार साहित्य सृजन से इस बात को ध्यान में रखकर ही समाज को दिशा दिखाने का महनीय कार्य करते हैं।

इन्हीं अर्वाचीन साहित्यकारों की श्रृंखला में आचार्य बच्चूलाल जी का नाम बड़े ही गर्व और सम्मान के साथ लिया जाता है।

आचार्यजी संस्कृत के मर्मज्ञ थे। परन्तु आचार्यजी ने जो हिन्दी साहित्य सृजन किया उसमें भी साहित्य क्षेत्र को समृद्धि मिली । एक प्रसन्न–मधुर व्यक्तित्व, प्रतिभासम्पन्न लेखनी के धनी, देवी शारदा की वीणा के पञ्चम स्वर तार की कम्पन वाली आवाज और स्पष्टवादिता, निडर, साहसी ऐसे अवस्थी जी ने साहित्य रचना में विपुलता एवं विविधता की दृष्टि से आधुनिक संस्कृत को नवीन स्वरूप प्रदान किया।

आचार्य की सूक्ष्म दृष्टि अपने आसपास घट रही सामान्य घटनाओं को भी काव्य बना देती थी। ये यथार्थ के समीप होती थी। अपने आसपास के सामाजिक वातावरण में व्याप्त व्याकुलताओं के भीतर छिपी व्यवस्थाओं को अनुभव करते थे तत्पश्चात् लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त भी करते

थे।

कविवर आचार्य की 'एकला चालो रेय की प्रवृत्ति एवं उससे जन्मा स्वाध्याय तथा स्वसंवादी स्वभाव साहित्य को प्रेरणा व निखार देता रहा। आचार्यजी ने अपने साहित्य में विशुद्ध भारतीय विषयों को स्थान दिया हैं।

आचार्य बच्चूलालजी ने अध्ययन-अध्यापन एवं शोध के साथ ही संस्कृत और हिन्दी में साहित्य निर्माण किया। आचार्य ज्ञान द्धारा रचित साहित्य का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है -

1. **'काव्य में रहस्यवाद' -** आचार्य ने **काव्य में रहस्यवाद** इस विषय को विद्धत्तापूर्ण विचार किया। इस पुस्तक में रहस्यवाद के विविध पक्षों पर विचार किया गया है। रहस्य का शब्दार्थ, रहस्य और दर्शन का सम्बन्ध, रहस्यकाव्य में भाव और ध्वनि, प्रतीक स्थान, रहस्यवाद व छायावाद का अन्तर इत्यादि बहुत से ज्ञातव्य विषयों का उन्होंने समीक्षात्मक, गवेषणापूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया है।

2. **'ध्वनिसिद्धान्त तथा तुलनीय साहित्य चिन्तन' -** आचार्य श्री बच्चूलाल अवस्थी प्रणीत **ध्वनि सिद्धान्त तथा तुलनीय साहित्य चिन्तन** शीर्षक कृति ध्वनि विवेचन-परक प्रयासों में उल्लेखनीय है। इस पुस्तक से आचार्य अवस्थी ने ध्वनि सम्बन्धी चिन्तन के लिए क्षितिज उद्धाटित किए हैं। नि:सन्देह इतने विस्तृत फलक पर ऐसा अनेकायामी चिन्तन उनकी सारस्वत साधना का उत्ताम निदर्शन है। 'ध्वनि सिद्धान्त तथा तुलनीय साहित्य का आचार्य अवस्थीजी ने अत्यन्त प्रौढ़ता से विवेचन किया है और गहराई तथा सूक्ष्मता से सम्पूर्ण काव्य को जाँचा-परखा प्रतीत होता है जिससे वह समीक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि जान पड़ती है।

3. **'भाषा काव्याङ्गदीपिका' -** अङ्गों का सम्यग् दर्शन करने के लिए जिस प्रकार प्रकाश की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार काव्याङगों के वास्तविक ज्ञान के लिए यह दीपिका अपेक्षणीय है। इसके अन्तर्गत भूमिका रूप में भाषा-ज्ञान भी कराया गया है। डॉ. अवस्थी भारतीय काव्यशास्त्र-परम्परा के निष्णात विद्धान एवं भाषा काल के मर्मज्ञ विवेचक है अत: पारम्परिक काव्यलक्षणों से सम्पन्न यह ग्रन्थ अनुकरणीय है।

4. **'पाणिनीय शिक्षा का त्रिनयनभाष्य' -** आचार्य अवस्थी जी का त्रिनयनभाष्य केवल पाणिनीय शिक्षा का ही भाष्य नहीं है अपितु सारे ग्रन्थों और सारे प्रातिशाख्यों का तथा अपेक्षित अन्य ग्रन्थों का ऐसा निचोड़ है, जो संस्कृत-वाङ्मय को, संस्कृत को न जानने वालों के लिए उपयोगी है।

5. **'प्रतानिनी' -** आचार्य बच्चूलाल अवस्थीजी का काव्य संग्रह **प्रतानिनी** जिस सुन्दर व बड़े कलेवर के साथ प्रकाशित हुआ है। इस दृष्टि से आज तक संस्कृत में लिखे गये कोश काव्यों में उसे सब से उच्च स्थान प्राप्त है।

इस काव्य में कलेवर की वृहत्ता नहीं अपितु इसकी भाषा आचार्य जी द्धारा अधीन समस्त शास्त्रों के रस को अपने भीतर समेट कर प्रस्फुटित हुई है। इन गीतों में एक-एक पद में आचार्यजी का पाण्डित्य झलक जाता है।

अभी तक ऐसा होता रहा है कि जिन काव्यों में पाण्डित्य की प्रधानता है, उनमें भावपक्ष शुष्क रहा है, किन्तु इस दृष्टि से प्रतानिनी अद्धितीय है क्योंकि, उसमें पाण्डित्य के साथ-साथ रस की धारा बह रही है।

इस काव्य में पाँच प्रतान हैं -

1) **स्तवक प्रतान -**

इसमें अत्यन्त मर्मस्पर्शी भाव-प्रधान स्तोत्र हैं।

(नित्यं विष्णुपदी-पदीकृत-जटाजूटोक्षित-प्रस्थभू:
प्रेता नुग्रहकातरेण मनसा भस्मावगुण्ठोज्जल:)
प्रतानिनी महाकाल प्रसदीदतु 39

2) **अन्योक्तिप्रतान -** जो पूरी व्यवस्था में फैली विसङ्गतियों पर तीखा प्रहार करती है। इनमें इतनी गहरी व्यञ्जना है कि कोई भी सहृदय इनसे अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता।

को दोह: क्व चदोहक: कव ममता गेहस्य क: पालको
राज्य कस्य च कस्य वा जनपद: सर्वस्य सर्वसंघ
इत्येव कृतनिश्चया वनगवी गोचारकान् धुत्वती
स्वेच्छाचारपरायणा स्वकटकेनाहात्यते खर्वटे।
प्रतानिनी वनगवी 80

3) **गजल गीति प्रतान -** गजन के शिल्प और विधा पर अधिकार रखने वाले डॉ. अवस्थीजी ने इस प्रतान में भी अन्योक्तियाँ ही लिखी है परन्तु ये गजल में निबद्ध हैं। जो पाठकों को अलौकिक आनन्दानुभूति करवाती है।

क्व यातास्ते तथा क: एते इस प्रतान की दो प्रमुख गजले हैं जिसमें गजलकार अवस्थीजी ने आज के परिवर्तित आधुनिक वातावरण में स्त्री की भूमिका व अधोपतन की ओर बढ़ता समाज, कर्मठ तथा सज्जन व्यक्तियों का अभाव, जोड़-तोड़ की राजनीति का बलवती होना आदि पर अत्यन्त व्यथित मन से प्रहार किया है।

चटुव्याहारसौभाग्यं प्रतीषत् सप्रतीकारा:
प्रतीपं कूणितापाङ्गाश्चमत्कारा: क्व यातास्ते
प्रतानिनी क्व यातास्ते 144

क: एते में आचार्यजी ने स्वभाव से कुटील, धूर्त, धोखेबाज जिनकी कथनी करनी में अन्तर हो ऐसे छद्मरूप धारी बहुरूपियों को उद्धाटित किया है।

पतङ्गा समन्तात् पतन्त: क एते।
प्रतानिनी क एते 98

इन गजलों में उनकी व्यञ्जना पूर्ववर्ती समस्त संस्कृत साहित्य को अतिक्रान्त करती है यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है।

4) **विरागप्रतान -** इसके बीज में कवि ने अपने दार्शनिक होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है। जो काव्य के माध्यम से प्रदर्शित हो रहा है।

अद्यावधि प्रणिहितात्मतया परेशे
सन्तोष एव परमं धनमित्यमंस्था:
किन्तु प्रतारित् इवासि वृथैव लोभाद्
वित्तप्रधानमवलोक्य जनस्य वृत्तम् ॥
प्रतानिनी विरागप्रतान 214

5) **प्रकीर्ण प्रतान -** स्फूट गीत के माध्यम से इस प्रतान में कवि ने संस्कृत भाषा का पतन, विदेशी भूषा, धर्म व भाषा पर कटाक्ष तथा कुलगुरू कालिदास क्षिप्रा नदी आदि का वर्णन किया है।

विदेशवेषेण विदेशभूषया विदेशधर्मेण विदेशभाषया।
विदेशिभूता: खलु हा स्वदेशिन: नाम कथं नुजानताम्
प्रतानिनी प्रकीर्णप्रतान गीर्वाणवाणी 261

6) **वादत्रयी -** आचार्य बच्चूलालजी ने कर्मवाद प्रामाण्यवाद एवं ख्यातिवाद से मिलाकर वादत्रयी ग्रन्थ का निर्माण किया है।

वादत्रयी ग्रन्थ विद्धानों के लिए सम्मानीय एवं छात्रों के लिये मार्ग प्रशस्त करने का कार्य करता है।

7) **भारतीय दर्शन बृहत्कोश -** भारतीय दर्शन बृहत्कोश समग्र वाङ्मय

मे एक अमूल्य निधि है। यह बृहत्कोश न केवल संस्कृत क्षेत्र में अपितु दर्शन, साहित्य, व्याकरण, भाषा–विज्ञान, हिन्दी आदि समस्त क्षेत्रों को परिव्याप्त कर एक अनुपम स्थान पाता है।

आचार्य बच्चूलालजी के मन में साहित्य आकार और प्रकार के विपुल और उच्चकोटि का होना चाहिए। उनके मत में कवि प्रजापति होता है। वहीं समाज को सही दिशा देने में समर्थ है। अत: सदैव गहन अनुभूति और कल्पनाशक्ति अपेक्षित रहती ही है।

वे काव्यलेखन में 'मूड' को महत्व नहीं देते थे। उन का मानना था कि, कवि के पास शब्दशक्ति होती है, स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, सञ्चारी भाव उसके अधिकार में होते हैं। वह इनके सहारे हर समय रचना करने में समर्थ है।

आचार्य बच्चूलालजी ने अपनी रचनाओं में बोधक शैली, शास्त्रीय शैली के उदाहरण देकर बात समझाने का सफल प्रयत्न किया है।

उन्होंने पुरातन का अन्धानुकरण नहीं किया व नवीन के प्रति अति उत्साही भी नहीं हुए । इनके साहित्य में उदाहरण पारम्परिक ग्रन्थों से न लेकर श्रम से आधुनिक और अधुनातन काव्यों से लेकर स्वयं की योग्यता और पाण्डित्य सिद्ध किया है।

आचार्य बच्चूलाल अवस्थी संस्कृत साहित्य के दैदीप्यमान नक्षत्र है जो साहित्य सृष्टि में अपनी रचनाओं से सदैव चमकते रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. प्रतानिनी – आचार्य बच्चूलाल अवस्थी
2. अभिनन्दन ग्रन्थ
3. आधुनिक संस्कृत काव्य की परम्परा – मंजुलता शर्मा
4. ध्वनि सिद्धांत तथा तुलनीय साहित्य चिन्तन – आचार्य बच्चूलाल अवस्थी
5. भाषा काव्यांगदीपिका – आचार्य बच्चूलाल अवस्थी
6. पाणिनी शिक्षा का त्रिनयनभाष्य – आचार्य बच्चूलाल अवस्थी
7. काव्य में रहस्यवाद – आचार्य बच्चूलाल अवस्थी

Footnotes:-

1. journalofemergingtechnologyhttps://www.jetir.org 03:45pm07/02/24
2. प्रो. डॉ. ताराशङ्कर शर्मा 'पाण्डेय' की कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन, कोटा विश्वविद्यालय शोधार्थी (प्रियंका शर्मा)

****